Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Govt. of Haryana

No. 8-2026] CHANDIGARH, TUESDAY, FEBRUARY 24, 2026 (PHALGUNA 5, 1947 SAKA)

PART–1

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 13 फरवरी, 2026

संख्या 12/173–2009/पुरा/516-523.— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों तथा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणाा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है;

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हों, के साथ जो आयुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाए, पर विचार करेगी।

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
उपायुक्त निवास, रोहतक	उपायुक्त निवास, रोहतक	रोहतक	रोहतक	खसरा संख्या 8147–8148–8149	18130 वर्ग गज	सरकार	रोहतक के उपायुक्त का आवास हरियाणा में ब्रिटिश काल के सबसे पुराने स्मारकों में से एक है। यह इंडो–सारसेनिक शैली की एक प्रभावशाली इमारत है। यह केवल स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण नमूना ही नहीं है, बल्कि औपनिवेशिक इतिहास को समझने का एक स्त्रोत भी है, क्योंकि अंग्रेजों द्वारा निर्मित इमारतों को कई कारकों ने प्रभावित किया था, जिनमें से प्रमुख था शक्ति और नियंत्रण का प्रदर्शन। इसी मानसिकता के साथ ब्रिटिश वास्तुकारों ने भारत के दृश्य परिदृश्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना शुरू किया। 1873 में, टी. रोजर स्मिथ ने निष्कर्ष निकाला ''जिस प्रकार हमारा प्रशासन यूरोपीय न्याय, व्यवस्था, कानून, ऊर्जा और सम्मान का प्रदर्शन करता है, उसी प्रकार हमारी इमारतों को भी यूरोपीय कला के उच्च मानकों को बनाए रखना चाहिए। उन्हें यूरोपीय होना चाहिए, न केवल हमारे लिए एक प्रेरणा के रूप में, बल्कि हमारी उपस्थिति के एक विशिष्ट प्रतीक के रूप में भी, जिसे देश के मूल निवासी सम्मान और प्रशंसा के साथ देखें।'' स्मिथ के निष्कर्ष से यह स्पष्ट है कि सम्मान और प्रशंसा पाने के लिए और साथ ही ''विशिष्ट'' होने के लिए वास्तुकला का यूरोपीय होना आवश्यक है। यूरोपीय शैली का उपयोग करने का यह विचार प्रशासकों और वास्तुकारों, विशेष रूप से बॉम्बे और कलकत्ता में, दोनों द्वारा पसंद किया गया था। कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास में पश्चिमी शास्त्रीय (गॉथिक डोरिक) शैली में विशाल इमारतें बनाई गईं। विक्टोरिया मेमोरियल शुद्ध यूरोपीय या ग्रीक–डोरिक शैली का सबसे प्रमुख उदाहरण है। बाद में, उपनिवेश के लोगों को समझने की तीव्र आवश्यकता के कारण, अंग्रेजों ने अपनी वास्तुकला में भारतीय डिजाइन तत्वों को शामिल करना चाहा। ''सारसेनिक'' मेहराब और गुंबद इस संश्लेषण के प्रतीक बन गए। थॉमस मेटकाफ लिखते हैं, इस सारसेनिक, शैली की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण इसके राजनीतिक निहितार्थ भी थे, क्योंकि सारसेनिक शैली मुख्य रूप से मुगल साम्राज्य से जुड़ी थी, जिसकी शक्ति और वैभव पर अब अंग्रेज अपना दावा करना चाहते थे। ऊपर उल्लिखित बंगला इस संश्लेषण का एक अच्छा उदाहरण है। इस संश्लेषण का तार्किक परिणाम लुटियंस द्वारा निर्मित नई दिल्ली में देखने को मिला। यह रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि किसी शहर के जीवन में ऐतिहासिक स्मारकों और इमारतों का कितना महत्व है। यह न केवल शहर को एक विशिष्ट पहचान देता है, बल्कि समकालीन शैली में परंपरा को समाहित करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार एक शहर कुछ विशिष्ट विशेषताएं प्राप्त करता है जो उसे अन्य शहरों से अलग करती हैं। इस चर्चा के आलोक में, हमारी चिंता का दायरा केवल विरासत के संरक्षण से कहीं अधिक व्यापक है। चूंकि इस बंगले का इतिहास में एक अनूठा स्थान है, इसलिए 19वीं शताब्दी के आरंभिक भाग में अंग्रेजों द्वारा निर्मित लगभग सभी इमारतें विशुद्ध यूरोपीय शैली की थीं, जबकि यह बंगला, हालांकि 1800 ई. में निर्मित हुआ था, मुगलों

							की इंडो–फारसी शैली से अत्यधिक प्रभावित था, जो उस काल की प्रचलित प्रथा से एक अत्यंत रोचक विचलन है। ऐतिहासिक रूप से यह इस बात को भी दर्शाता है कि दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में कभी शक्तिशाली रहे मुगल साम्राज्य के सांस्कृतिक प्रभाव को नजरअंदाज करना लगभग असंभव था। यह बंगला इस बात को और अधिक स्पष्ट करता है कि अंग्रेजों ने नई दिल्ली का निर्माण करते समय भारतीय सौंदर्य प्रतीकों को क्यों चुना। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक भाग में, जब नई दिल्ली के निर्माण की विशाल परियोजना शुरू हुई, ब्रिटिश साम्राज्य अपने चरम पर था। इतना चरम कि रूडयार्ड किपलिंग जैसे कवि ने यूरोपियों की एशियाई और अन्य लोगों पर राजनीतिक और सांस्कृतिक श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए ''जब मनुष्य का बोझ'' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग किया। जबकि उस समय लुटियंस भारतीय वास्तुकला से प्रेरणा ले रहे थे, वे किपलिंग और उनके जैसे अन्य लोगों द्वारा परिकल्पित यूरोपीय श्रेष्ठता की हानिकारक धारणा पर सवाल उठाते हैं। ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में श्रेष्ठता के बजाय संश्लेषण ही प्रमुख शक्ति रहा है। यह बंगला इतिहास के इस शाश्वत तथ्य को पुष्ट करता है। यह एक जीवंत स्मारक है।

अमित कुमार अग्रवाल,
आयुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 13th February, 2026

No. 12/173-2009/pura/516-523.— Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains and ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below, to be protected archaeological sites and remains specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be protected area.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, which may be received by the Commissioner and Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh from any person with respect to the proposal before the expiry of the period so specified: -

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeo-logical sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
D.C. Residence, Rohtak	D.C. Residence, Rohtak	Rohtak	Rohtak	Khasra No. 8147-8148-8149	18130 sq.yard	Government	The Deputy Commissioner residence of the Rohtak is one of the oldest monuments of British period in Haryana. It is an impressive building of indo -sarcenic style. It is not merely a piece of architectural importance but a source to understand colonial history as many factors influenced the buildings designed and constructed by the British; chief among them was the projection of power and control. It is with this mindset that British architects began dominating the visual landscape of India. In 1873, T. Roger Smith concluded: "As our administration exhibits European justice, order, law, energy, and honour so our buildings ought to hold up a high standard of European art. They ought to be European both as a rallying point for ourselves, and as raising a distinctive symbol of our presence to be beheld with respect and even with admiration by the natives of the country". It is evident from Smith's conclusion that architecture must be European to inspire respect and admiration and also, to be "distinctive." This idea of using a European style was preferred by both administrators ad architects, notably in Bombay and Calcutta. Colossal buildings in Western Classical (Gothic Doric) style were built in Calcutta, Bombay and in Madras. The Victoria Memorial is the foremost epitome of pure European or Greek- Doric order. Subsequently with the urgent need to understand the people of the colony, the British wanted to incorporate Indian design elements into their architecture. The "Sarcenic" arch and dome came to be the standard bearers for this synthesis. Thomas Metcalf notes, "Central to the appeal of this [Sarcenic] style too, of course, were its political implications, for the Sarcenic style was the style associated above all with the Mughal Empire, whose power and majesty the British now wished to clain as their own". The above mentioned bungalow is a good example of this synthesis. The logical culmination of this synthesis was realized in New Delhi built by Lutyens. What is important to underline is the importance of historical monuments & buildings in the life of a city. It not only gives a distinct identity to the city but further encourages incorporating tradition in contemporary style. Thus a city acquires certain distinctive characteristics which single it out amongst the others. In the light of this discourse the scope of our concern goes much beyond the mere preservation of the heritage. Since this bungalow has a unique position in the course of history, almost all the buildings built by British during early part of the 19th century were of pure European style on the contrary this bungalow though built in 1800A.D., was heavily influenced by the Indo Persian style of Mughals, which is a very interesting deviation from the common practice of that period. Historically it also reflects that it was almost impossible to overlook the cultural influence of once mighty Mughal Empire in and around Delhi. This bungalow also paved the way to further appreciate the reason why British chose Indian aesthetic symbols while making New Delhi. During early part of the Twentieth Century, when the Herculean project of building New Delhi begun, the British Empire was on its peak so much so that poet like Rudyard Kipling used the phrase When Man's Burden in order to assert the political and cultural supremacy of Europeans over Asians and others. Whereas at that time Lutyens was taking inspirations from Indian architecture it questions pernicious notion of European supremacy as envisaged by the Kipling and others like him. In the process of historical evolution synthesis has been the main force rather than the supremacy. This bungalow reinforces this eternal fact of history. It is a live monument.

AMIT KUMAR AGRAWAL,
Commissioner & Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

12386—C.S.—H.G.P., Pkl.